


---

Shivatandava Stutih by Rajashekharapandya

——  
राजशेखरपाण्ड्यकृता शिवताण्डवस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Shivatandava Stutih by Rajashekharapandya

File name : shivatANDavastutiH2.itx

Category : shiva, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Description/comments : Minakshi stutimanjari and Halasya Mahatmyam edited by SV

Radhakrishna Sastri

Latest update : May 20, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 23, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



## राजशेखरपाण्ड्यकृता शिवताण्डवस्तुतिः



राजशेखरपाण्ड्यः -

परिपूर्णं परानन्दं सत्यज्ञानाद्वयात्मकम् ॥ १ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

श्रीमत्पञ्चाक्षरमयं पञ्चकृत्यैककारणम् ॥ २ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

विश्वाधिकं विश्वरूपं विश्वात्मानं परात्परम् ॥ ३ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

योगाभ्यासरतैस्सद्भिस्सदा ध्येयं सुसिद्धिदम् ॥ ४ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

भक्तापद्भञ्जनपरं भक्तिगम्यं भवापहम् ॥ ५ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

भोगमोक्षप्रदं पुंसामागमान्तैरभिष्टुतम् ॥ ६ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

द्वादशान्तगतं सूक्ष्मं सोमसूर्याग्निकोटिभम् ॥ ७ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

षट् त्रिंशत्तत्त्व सोपानमहाप्रासाद मध्यगम् ॥ ८ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

कालातीतं कालकालं कलाधरकलाधरम् ॥ ९ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

सूक्ष्मपञ्चाक्षरीभूतप्रणवागारमध्यगम् ॥ १० ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।

निवृत्त्यादिकलातीतं नित्यं सकलनिष्कलम् ॥ ११ ॥

भजामि सुन्दरेशानं महदद्भुतताण्डवम् ।  
सर्वसम्पत्करं सद्यस्सर्वापद्भञ्जनक्षमम् ॥ १२ ॥

भजामि परमेशानं महदद्भुत ताण्डवम् ।  
वीताघसन्धैर्विबुधैर्विशिष्टैः विद्याविशेषार्चितपादपद्म ।  
हालास्य नाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं श्रीसुन्दरेशाद्भुतताण्डवेश ॥ १३ ॥

इति स्तुत्वा सुन्दरेशं महाताण्डवपण्डितम् ॥ १४ ॥

भक्त्या परवशो भूत्वा प्रणिपत्य पुनः पुनः ।  
कृतार्थोऽस्मि कृतार्थोऽस्मि कृतार्थोऽस्मीत्युदीर्य सः ॥ १५ ॥

उत्थाय प्रार्थयामास राजशेखर ईश्वरम् ।  
अनुग्रहाय लोकानां किञ्चित्कुञ्चितमुन्नतम् ॥ १६ ॥

वामं श्रीचरणं शम्भो तव सर्वत्र दृश्यते ।  
न तदाश्चर्यमेतत्तु विशिष्टं महदद्भुतम् ॥ १७ ॥

अस्मद्वंशविवृद्ध्यर्थं लोकानुग्रहहेतवे ।  
एवमत्यद्भुतं नृत्तं सदैव कुरु शङ्कर ॥ १८ ॥


एवं सम्प्रार्थिते भूपे सदा सर्वेष्टसिद्धये ।  
ओमोमिति तदा वाणी खादभून्मधुरस्वना ॥ १९ ॥

श्रुत्वा तामतिसन्तुष्टः प्रणम्य स पुनः पुनः ।  
आत्मनीशस्य वात्सल्यं चिन्तयन्नतिभक्तिमान् ॥ २० ॥


इति राजशेखरपाण्ड्यप्रोक्ता शिवताण्डवस्तुतिः समाप्ता ।  
श्रीस्कान्दे महापुराणे अगस्त्यसंहितायां  
हालास्यमाहात्म्ये अध्यायः ३०, लीला २४, श्लोकानि ३८-५७

Proofread by Rajesh Thyagarajan

---

——  
*Shivatandava Stutih by Rajashekharpandya*

pdf was typeset on May 23, 2023

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

